Faith for Rights

18 "अधिकारों के लिए विश्वास" पर प्रतिबद्धताएं

UNITED NATIONS HUMAN RIGHTS OFFICE OF THE HIGH COMMISSIONER

हम, मानव अधिकारों के क्षेत्र में काम करने वाले और 28-29 मार्च 2017 को बेरूत में इकट्ठे हुए विश्वास-आधारित और नागरिक समाज के कर्ता, इस गहरे विश्वास को व्यक्त करते हैं कि हमारे संबंधित धर्म और विश्वास **सभी मनुष्यों की गरिमा और समान मूल्य को बनाए रखने के** लिए एक समान प्रतिबद्धता साझा करते हैं। इसलिए साझा मानवीय मूल्य और समान गरिमा हमारी संस्कृतियों की आम जड़ें हैं। आस्था और अधिकार परस्पर मजबूत होने चाहिए। धर्मों या विश्वासों की व्यक्तिगत और सांप्रदायिक अभिव्यक्ति ऐसे वातावरण में पनपती है जहां सभी व्यक्तियों के समान मूल्य के आधार पर मानव अधिकारों की रक्षा की जाती है। इसी तरह, मानवाधिकार धर्मों या विश्वासों द्वारा प्रदान की गई गहरी जड़ें नैतिक और आध्यात्मिक नींव से लाभ उठा सकते हैं।

"अधिकारों के लिए विश्वास" पर वर्तमान घोषणापत्र दुनिया के सभी क्षेत्रों में धर्मों और विश्वासों से संबंधित व्यक्तियों तक पहुंचती है, ताकि सभी संबंधितों द्वारा सहमत एक आम कार्रवाई-उन्मुख मंच के आधार पर सामंजस्यपूर्ण, शांतिपूर्ण और सम्मानजनक समाजों को बढ़ाया जा सके और सभी अभिनेताओं के लिए खुला हो जो इसके उद्देश्यों को साझा करते हैं। हम महत्व देते हैं कि अधिकारों के लिए विश्वास पर हमारी घोषणा, इसकी संस्थापक मिसाल रबात प्लान ऑफ एक्शन की तरह, दोनों की कल्पना और संचालन संयुक्त राष्ट्र में और संयुक्त राष्ट्र के समर्थन से किया गया था जो दुनिया के सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, और संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार तंत्र जैसे कि विशेष प्रतिवेदक और संधि निकाय के सदस्यों द्वारा समृद्ध किया गया था।

2012 **रबात योजना**[i] धार्मिक नेताओं की तीन विशिष्ट मुख्य जिम्मेदारियों को व्यक्त करती है:(a) धार्मिक नेताओं को असहिष्णुता या अभिव्यक्ति के संदेशों का उपयोग करने से बचना चाहिए जो हिंसा, शत्रुता या भेदभाव को भड़का सकते हैं; (b) असहिष्णुता, भेदभावपूर्ण रूढ़िवादिता और घृणास्पद भाषण की घटनाओं के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक और तत्परता से बोलने में धामक नेताओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका है; और (c) धार्मिक नेताओं को स्पष्ट होना चाहिए कि घृणा के लिए उकसाने की प्रतिक्रिया के रूप में हिंसा को कभी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है (उदाहरण के लिए हिंसा को पूर्व उकसावे से उचित नहीं ठहराया जा सकता है)।

रबात कार्य योजना, जिसे राज्यों द्वारा बार-बार सकारात्मक रूप से लागू किया गया है, द्वारा व्यक्त उपरोक्त तीन मुख्य जिम्मेदारियों को ठोस प्रभाव देने के लिए, हम **"अधिकारों के लिए विश्वास" पर 18 प्रतिबद्धताओं**[ii] का निम्नलिखित चार्ट तैयार करते हैं,[2] जिसमें संबंधित अनुवर्ती कार्रवाइयां शामिल हैं:

१. हमारी सबसे मौलिक जिम्मेदारी **हर किसी के स्वतंत्र विकल्पों के अधिकार के लिए खड़े होना और कार्य** करना है और विशेष रूप से सभी के विचार, विवेक, धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता के लिए। हम नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध के अनुच्छेद 18 सहित सार्वभौमिक मानदंड[iii] और मानक[iv] के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं, जो विचार और विवेक की स्वतंत्रता या किसी धर्म या विश्वास को अपनाने या अपनाने की स्वतंत्रता पर किसी भी सीमा की अनुमति नहीं देता है। सार्वभौमिक मानदंडों द्वारा बिना शर्त संरक्षित ये स्वतंत्रताएं धार्मिक शिक्षाओं के अनुसार पवित्र और अभेद्य अधिकार भी हैं।
   - *"धर्म में कोई बाध्यता नहीं होगी। (कुरान 2:256);*
   - "सत्य तुम्हारे प्रभु की ओर से है; तो जो चाहे विश्वास करे और जो चाहे अविश्वास करे।" *(कुरआन 18:29);*
   - *"परन्तु यदि प्रभु की सेवा करना तुम्हें अनावश्यक लगे, तो आज के दिन अपने लिये चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे..."* (योशुआ *24:15)*
   - *"कोई दूसरे पर विवश न करे; कोई दूसरे का शोषण नहीं करेगा। हर कोई, प्रत्येक व्यक्ति, खुशी और आत्म-पूर्ति की तलाश और पीछा करने का अविच्छेद्य जन्म अधिकार है। प्रेम और अनुनय सामाजिक सामंजस्य का एकमात्र नियम है। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 74)*
   - *"जब विवेक की स्वतंत्रता, विचार की स्वतंत्रता और भाषण का अधिकार प्रबल होता है - यह कहना है, जब हर आदमी अपने आदर्शीकरण के अनुसार अपने विश्वासों को अभिव्यक्ति दे सकता है - विकास और विकास अपरिहार्य हैं। (अब्दुल-बहा)*
   - *"लोगों को एक-दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करने का लक्ष्य रखना चाहिए जैसा वे स्वयं*

चाहते हैं- सहिष्णुता, विचार और करुणा के साथ। (सुनहरा नियम)[v]

२. हम "अधिकारों के लिए विश्वास" पर वर्तमान घोषणा को **विश्वासियों (चाहे ईश्वरवादी, गैर-आस्तिक, नास्तिक या अन्य) के लिए एक सामान्य न्यूनतम मानक के रूप में देखते हैं**, जो हमारे दृढ़ विश्वास पर आधारित है कि धर्म या विश्वास की व्याख्या को मानव गरिमा की सुरक्षा के स्तर में जोड़ना चाहिए जो मानव निर्मित कानून प्रदान करते हैं।

३. क्योंकि धर्म अनिवार्य रूप से मानवीय व्याख्याओं के अधीन होते हैं।, इसलिए हम **धार्मिक ग्रंथों की समझ पर रचनात्मक जुड़ाव को बढ़ावा देने के** लिए प्रतिबद्ध हैं। नतीजतन, धार्मिक मामलों पर महत्वपूर्ण सोच और बहस को न केवल सहन किया जाना चाहिए, बल्कि एक वैश्वीकृत दुनिया में प्रबुद्ध धार्मिक व्याख्याओं की आवश्यकता के रूप में उत्साहित किया जाना चाहिए, जो तेजी से बहु-सांस्कृतिक और बहु-धार्मिक समाजों से बना है जो लगातार उभरती चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

४. हम धर्म या विश्वास के सभी क्षेत्रों और अभिव्यक्तियों में **समान उपचार का समर्थन करने और बढ़ावा देने** और सभी प्रकार के भेदभावपूर्ण प्रथाओं की निंदा करने की प्रतिज्ञा करते हैं। हम **किसी भी व्यक्ति या समूह के खिलाफ भेदभाव करने के लिए "राज्य धर्म" की धारणा के उपयोग को रोकने के** लिए प्रतिबद्ध हैं और हम ऐसी किसी भी व्याख्या को मानवता की एकता और मानव जाति की समान गरिमा के विपरीत मानते हैं। इसी तरह, हम "सैद्धांतिक धर्मनिरपेक्षता" के उपयोग को व्यवहार में धार्मिक या विश्वास बहुलवाद के लिए जगह को कम करने से रोकने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

- "तब पतरस ने बोलना शुरू किया: 'अब मैं सच में समझ गया हूँ कि परमेश्वर पक्षपात नहीं करता। (प्रेरितों के काम 10:34)

५. हम "अधिकारों के लिए विश्वास" पर इस घोषणा को लागू करने में **गैर-भेदभाव और लैंगिक समानता सुनिश्चित करने का वचन देते** हैं। हम विशेष रूप से पुनरीक्षण करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, प्रत्येक हमारी क्षमता के क्षेत्रों में, उन धार्मिक समझ और व्याख्याएं जो लैंगिक असमानता और हानिकारक रूढ़िवादों को बनाए रखने या यहां तक कि लिंग आधारित हिंसा को माफ करने के लिए दिखाई देती हैं। हम सभी के लिए न्याय और समान मूल्य सुनिश्चित करने के साथ-साथ सभी महिलाओं, लड़कियों और लड़कों के अधिकार की पुष्टि करने के लिए प्रतिज्ञा करते हैं कि वे किसी भी प्रकार के भेदभाव और हिंसा के अधीन न हों, जिसमें हानिकारक प्रथाएं जैसे कि महिला जननांग विकृति, बाल और/या जबरन विवाह और तथाकथित सम्मान के नाम पर किए गए अपराध शामिल हैं।

- " एक पुरुष को अपनी पत्नी का सम्मान स्वयं से अधिक करना चाहिए और उससे उतना ही प्रेम करना चाहिए जितना वह स्वयं से करता है।(तल्मूड, येबामोट, 62, बी)
- " मैं तुम में से किसी के कार्य को नष्ट नहीं होने दूँगा — चाहे वह पुरुष हो या स्त्री; क्योंकि तुम एक-दूसरे से जुड़े हुए हो।" *(3 कुरान, 195)*
- " हे मानव जाति! निःसंदेह हमने तुम्हें पुरुष और स्त्री से पैदा किया, और तुम्हें जातियों और समुदायों में बाँटा ताकि तुम एक-दूसरे को जान सको।*"(क़ुरआन 49:13)*
- " परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी ही छवि में रचा; उसे नर और नारी के रूप में रचा *(उत्पत्ति 1, 27)*
- "तुम में सबसे श्रेष्ठ वह है जो अपनी पत्नी के प्रति सबसे अच्छा है।*"(हदीस)*
- " स्त्री ही जीवन की सहचरी और मित्र है। वही वंश की निरंतरता बनाए रखती है। जिसे महान जन्म लेते हैं, उस स्त्री को तुच्छ कैसे समझा जा सकता है? स्त्री से ही स्त्री जन्म लेती है; स्त्री के बिना कोई अस्तित्व नहीं*"(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 473)*
- "मानवता का संसार दो पंखों से युक्त है — पुरुष और स्त्री। जब तक ये दोनों पंख समान रूप से शक्तिशाली नहीं होंगे, तब तक यह पक्षी उड़ नहीं सकता। जब तक स्त्री को पुरुष के समान स्थान

और अवसर नहीं मिलते, तब तक मानवता असाधारण उपलब्धियाँ प्राप्त नहीं कर सकती।" *(अब्दुल-बहा)*

- "क्षमता निर्माण के लिए एक समग्र, व्यापक और प्रभावी दृष्टिकोण का उद्देश्य प्रभावशाली नेताओं को शामिल करना होना चाहिए, जैसे कि पारंपरिक और धार्मिक नेता *[...]*" *(महिलाओं के खिलाफ भेदभाव के उन्मूलन पर समिति की संयुक्त सामान्य सिफारिश संख्या 31/हानिकारक प्रथाओं पर बाल अधिकारों पर समिति की सामान्य टिप्पणी संख्या 18, CEDAW/C/GC/31-CRC/C/GC/18, पैरा 70)*

६. हम अपने संबंधित क्षेत्रों के भीतर **अल्पसंख्यकों से संबंधित सभी व्यक्तियों के अधिकारों के लिए खड़े होने** और धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता के साथ-साथ सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और सार्वजनिक जीवन में समान रूप से और प्रभावी ढंग से भाग लेने के उनके अधिकार की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करते हैं, जैसा कि अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून द्वारा मान्यता प्राप्त है, सभी विश्वासियों के बीच एकजुटता के न्यूनतम मानक के रूप में।

७. हम **घृणा की वकालत के सभी उदाहरणों की सार्वजनिक रूप से निंदा करने की प्रतिज्ञा करते हैं जो हिंसा, भेदभाव या शत्रुता को उकसाते हैं**, जिनमें वे भी शामिल हैं जो अत्याचार अपराधों को जन्म देते हैं। हम इस तरह की वकालत की निंदा करने की सीधी जिम्मेदारी लेते हैं, खासकर जब यह धर्म या विश्वास के नाम पर आयोजित किया जाता है।

- **"अब यह आदेश है: जो करने वाला है, उसके साथ वैसा ही करें ताकि वह फिर से करे।"** (प्राचीन मिस्र, मध्य साम्राज्य)
- **"आघात का प्रतिकार न्याय से और कृपा का प्रतिकार कृपा से करें।"** (कन्फ्यूशियस)
- **"जो तुम्हें घृणित लगता है, उसे अपने मित्र से न करो।"** (तलमुद, शबात, 31,अ)
- **"हम जो भी शब्द बोलते हैं, उन्हें सोच-समझ कर चुनना चाहिए क्योंकि लोग उन्हें सुनेंगे और वे शब्द उन्हें भले या बुरे तरीके से प्रभावित करेंगे।"** (बुद्ध)
- **"आत्म-नियंत्रण द्वारा और धर्म (सही आचरण) को मुख्य ध्यान में रखते हुए, दूसरों से वैसे ही व्यवहार करो जैसे तुम अपने साथ करते हो।"** (महाभारत)
- **"तुम बदला नहीं लोगे और न ही अपने परिवार के खिलाफ कोई घृणा रखोगे। अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्रेम करो।"** (लेविटिकस 19:18)
- **"इसलिए जो कुछ भी तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी वैसे ही उनके साथ करो; क्योंकि यही कानून और भविष्यवक्ताओं का संदेश है।"** (मत्ती 7:12)
- **"किसी भी आत्मा को वह न सौंपो, जो तुम अपने लिए नहीं चाहते, और वह न कहो जो तुम स्वयं नहीं करते हो।"** (बहाउल्लाह)

८. इसलिए हम अपने संबंधित क्षेत्रों, नीतियों और पद्धतियों के भीतर व्याख्याओं, **दृढ़ संकल्पों या अन्य धार्मिक विचारों की निगरानी करने के लिए स्थापित करने की प्रतिज्ञा करते हैं जो सार्वभौमिक मानवाधिकार मानदंडों और मानकों के साथ स्पष्ट रूप** के खिलाफहैं, भले ही वे औपचारिक संस्थानों या स्वयं-नियुक्त व्यक्तियों द्वारा उच्चारित हों। हम एक अनुशासित तरीके से यह जिम्मेदारी संभालने का इरादा रखते हैं। दूसरों के विश्वास या विश्वासों को पहचानने के बिना, आत्मनिरीक्षण तरीके से केवल हमारे अपने संबंधित क्षेत्रों के भीतर उद्देश्यपूर्ण तरीके से।

- "दूसरों की आलोचना मत करो, नहीं तो तुम्हारी भी आलोचना की जाएगी। क्योंकि जिस तरह से तुम दूसरों की आलोचना करते हो, उसी तरह तुम्हारा भी मूल्यांकन होगा; और जिस मापदंड से तुम दूसरों को परखते हो, उसी मापदंड से तुम्हें भी परखा जाएगा।" *(*बाइबल, मत्ती *7:1–2)*

- "अपने हृदय को प्रजा के लिए करुणा, स्नेह और दया का अभ्यस्त बनाओ... क्योंकि वे दो प्रकार के होते हैं: या तो वे तुम्हारे धर्म में तुम्हारे भाई हैं या सृष्टि में तुम्हारे जैसे इंसान हैं... अतः उनके लिए उसी प्रकार क्षमा और माफ़ी का व्यवहार करो, जैसा कि तुम अल्लाह से अपने लिए चाहते हो।" *(*खलीफा अली का मिस्र के गवर्नर मालिक अश्तर को पत्र)

- "ईश्वर के धर्म का मूल उद्देश्य मानव जाति के बीच एकता स्थापित करना है। दिव्य अभिव्यक्तियाँ संगति और प्रेम के साधनों के संस्थापक थे। वे दुनिया में कलह, संघर्ष और नफरत पैदा करने नहीं आए थे। ईश्वर का धर्म प्रेम का कारण है, लेकिन अगर इसे शत्रुता और रक्तपात का स्रोत बनाया जाता है, तो निश्चित रूप से इसकी अनुपस्थिति इसके अस्तित्व के लिए बेहतर है; क्योंकि तब यह शैतानी, हानिकारक और मानव दुनिया के लिए एक बाधा बन जाता है। (अब्दुल-बहा)

९. हम किसी भी अभिनेता द्वारा किसी भी न्यायिक सार्वजनिक निर्धारण से बचने, वकालत करने और संयुक्त रूप से निंदा करने की भी प्रतिज्ञा **करते हैं, जिसका उद्देश्य धर्म के नाम पर किसी अन्य व्यक्ति या समुदाय के धर्म या विश्वास को इस तरह से अयोग्य ठहराना है** जो उन्हें धर्म के नाम पर हिंसा या उनके मानवाधिकारों से वंचित करने के लिए उजागर करेगा।

१०. हम धार्मिक **आधारों का दावा करने वाली बहिष्करण व्याख्याओं को इस तरह से विश्वास नहीं देने** की प्रतिज्ञा करते हैं जो धर्मों, विश्वासों या उनके अनुयायियों को घृणा और हिंसा को उकसाने के लिए साधन प्रदान करेंगे, उदाहरण के लिए चुनावी उद्देश्यों या राजनीतिक लाभ के लिए।

११. हम समान रूप से धर्म या विश्वास के मामलों पर **आलोचनात्मक आवाज़ों और विचारों पर अत्याचार नहीं करने के लिए** प्रतिबद्ध हैं, हालांकि उन्हें विषय वस्तु की "पवित्रता" के नाम पर गलत या आक्रामक माना जा सकता है और हम उन राज्यों से आग्रह करते हैं जिनके पास अभी भी ईशनिंदा विरोधी या धर्मत्याग विरोधी कानून हैं उन्हें निरस्त करने के लिए, क्योंकि ऐसे कानून विचार, विवेक, धर्म या आस्था की स्वतंत्रता पर तथा धार्मिक मुद्दों पर स्वस्थ संवाद और बहस पर नकारात्मक प्रभाव डालते है।

१२. हम पाठ्यक्रम, शिक्षण सामग्री और पाठ्यपुस्तकों को और परिष्कृत करने के **लिए प्रतिबद्ध** हैं, जहां कुछ धार्मिक व्याख्याएं, या जिस तरह से उन्हें प्रस्तुत किया जाता है, हिंसा या भेदभाव को अनदेखा करने की धारणा को जन्म दे सकता है। इस संदर्भ में, हम धर्म या विश्वास के क्षेत्र में विविधतावाद और **विविधतावाद** के लिए सम्मान को बढ़ावा देने के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा प्राप्त न करने के अधिकार को बढ़ावा देने का वचन देते हैं जो किसी के दृढ़ विश्वास के साथ असंगत है। हम धार्मिक प्रवचन के भीतर नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय वाचा के अनुच्छेद 19 के अनुरूप **अकादमिक स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करने के** लिए भी प्रतिबद्ध हैं ताकि धार्मिक सोच को बढ़ावा दिया जा सके जो नई चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है और साथ ही साथ स्वतंत्र और रचनात्मक सोच को सुविधाजनक बनाता है। हम शैक्षिक और संस्थागत क्षेत्रों में धार्मिक सुधारों के क्षेत्र में प्रयासों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

- "अच्छी नैतिकता का एकमात्र संभव आधार पारस्परिक सहिष्णुता और सम्मान है।" *(*ए. जे. आयर)

१३. हम उन अनुभवों और पाठों पर निर्माण करने का संकल्प लेते हैं जो हमने बच्चों और युवाओं के साथ संवाद करने में सीखा है, जो धर्म के नाम पर हिंसा के उकसाने के शिकार हैं या जिन्हें इस हिंसा का शिकार बनने का खतरा है, ताकि ऐसी कार्यप्रणालियाँ और उपयुक्त उपकरण और कथाएँ तैयार की जा सकें जो धार्मिक समुदायों को इस समस्या से प्रभावी रूप से निपटने में सक्षम बनाएं, विशेष रूप से यह ध्यान में रखते हुए कि माता-पिता और परिवारों की महत्वपूर्ण भूमिका है बच्चों और युवाओं में धर्म के नाम पर हिंसा के प्रति संवेदनशीलता के प्रारंभिक संकेतों को पहचानने और उनका समाधान करने में।"

- "किसी को भी तुच्छ न समझने दो क्योंकि तुम जवान हो, बल्कि विश्वासियों के लिए भाषण में, आचरण में, प्रेम में, विश्वास में और पवित्रता में एक आदर्श बनाओ। (1 तीमुथियुस 4:12)

१४. हम अपने संबंधित प्रभाव क्षेत्रों के भीतर, **अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस और रेड क्रीसेंट मूवमेंट और आपदा प्रतिक्रिया कार्यक्रमों में गैर-सरकारी संगठनों के लिए आचरण के सिद्धांतों** की *सभी मानवीय सहायता गतिविधियों में सम्मान सुनिश्चित करने की अनिवार्य आवश्यकता को बढ़ावा देने की प्रतिज्ञा करते हैं,*[vi] विशेष रूप से यह सहायता प्राप्तकर्ताओं के पंथ की परवाह किए बिना और किसी भी प्रकार के प्रतिकूल भेदभाव के बिना दी जाती है और उस सहायता का उपयोग आगे बढ़ाने के लिए नहीं किया जाएगा विशेष धार्मिक दृष्टिकोण।

१५. हम न **तो लोगों को मजबूर करने और न ही कमजोर परिस्थितियों में व्यक्तियों को** उनके धर्म या विश्वास से परिवर्तित करने के लिए शोषण करने की प्रतिज्ञा करते हैं, जबकि किसी धर्म या विश्वास को रखने, अपनाने या बदलने की हर किसी की स्वतंत्रता का पूरी तरह से सम्मान करते हैं और इसे शिक्षण, अभ्यास, पूजा और पालन के माध्यम से प्रकट करने का अधिकार है, या तो व्यक्तिगत रूप से या दूसरों के साथ समुदाय में और सार्वजनिक या निजी तौर पर।

१६. हम सार्वभौमिक मानवाधिकारों के संरक्षण को मजबूत करने और निवारक रणनीतियों को विकसित करने के उद्देश्य से धर्मों और **विश्वासों के आध्यात्मिक और नैतिक वजन का लाभ उठाने के लिए प्रतिबद्ध** हैं, जिन्हें हम अपने स्थानीय संदर्भों के अनुकूल बनाते हैं, प्रासंगिक संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं के संभावित समर्थन से लाभान्वित होते हैं।

- "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे अपने आप से करते हो। इनसे बढ़कर कोई आज्ञा नहीं है।"(मार्क 12:31)
- "लेकिन अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उनके साथ अच्छा व्यवहार करो और उन्हें बिना कुछ प्राप्त करने की उम्मीद किए उधार दो। तब तुम्हारा इनाम महान होगा।"(लूका 6:35)
- "ईश्वर के प्रति सचेत व्यक्ति हमेशा अविचलित रहता है, जैसे सूर्य, जो सभी को अपनी सुख और गर्मी प्रदान करता है। ईश्वर के प्रति सचेत व्यक्ति सभी को समान दृष्टि से देखता है, जैसे हवा, जो राजा और गरीब भिखारी दोनों पर समान रूप से बहती है।"(गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 272)
- "ईश्वर का धर्म और उसका दिव्य कानून सबसे प्रभावी उपकरण और मानवता में एकता की रोशनी के उदय के लिए सभी साधनों में सबसे सुरक्षित हैं। दुनिया की प्रगति, देशों का विकास, लोगों की शांति, और पृथ्वी पर रहने वाले सभी का शांति, ये सभी ईश्वर के सिद्धांतों और आदेशों में शामिल हैं।"(बहाउल्लाह)
-

१७. हम इस घोषणा के कार्यान्वयन स्तर पर एक-दूसरे का समर्थन करने का संकल्प लेते हैं, प्रथाओं का **आदान-प्रदान**, आपसी क्षमता निर्माण और धार्मिक और आध्यात्मिक उपदेशकों, शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए कौशल अद्यतन के नियमित कार्यक्रमों के माध्यम से, विशेष रूप से संवाद, धार्मिक या आस्था

अल्पसंख्यकों, अंतर-संप्रदाय मध्यस्थता, संघर्ष समाधान, सामुदायिक तनाव की प्रारंभिक पहचान और सुधारात्मक तकनीकों के क्षेत्रों में। इसी भावना में, हम **विशेषीकृत शैक्षिक संस्थानों के साथ स्थायी साझेदारी विकसित करने** के उपायों का पता लगाएंगे ताकि विश्वास और अधिकार से संबंधित विशिष्ट प्रश्नों पर अंतर्विषयक शोध को बढ़ावा दिया जा सके और उनके परिणामों का लाभ उठाया जा सके, जो हमारे "Faith for Rights" गठबंधन के कार्यक्रमों और उपकरणों में उपयोगी हो सकें।

१८. हम इस घोषणा और बाद में अधिकारों के संदेशों के लिए विश्वास को फैलाने के लिए **तकनीकी साधनों का अधिक रचनात्मक और लगातार उपयोग** करने की प्रतिज्ञा करते हैं, ताकि धर्मों और विश्वासों के क्षेत्र सहित विविधता से समृद्ध एकजुट समाजों को बढ़ाया जा सके। हम सशक्त क्षमता-निर्माण और आउटरीच टूल तैयार करने और उन्हें स्थानीय स्तर पर उपयोग के लिए विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराने के साधनों पर भी विचार करेंगे।

---

www.ohchr.org/EN/Issues/FreedomReligion/Pages/FaithForRights.aspx

---

[i] देखें संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज़ A/HRC/22/17/Add.4, अनुलग्नक, परिशिष्ट, पैरा 36.

[ii] नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध का अनुच्छेद 18 देखें: "(1) प्रत्येक व्यक्ति को विचार, विवेक और धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार होगा। इस अधिकार के अंतर्गत अपनी पसंद का धर्म या विश्वास रखने या अपनाने की स्वतंत्रता है और व्यक्तिगत रूप से या दूसरों के साथ समुदाय में तथा सार्वजनिक या निजी तौर पर अपने धर्म या विश्वास को पूजा, पालन, अभ्यास और शिक्षण में प्रकट करने की स्वतंत्रता शामिल है। (2) कोई भी ऐसी जबरदस्ती के अधीन नहीं होगा जो उसकी पसंद के धर्म या विश्वास को रखने या अपनाने की स्वतंत्रता को बाधित करे। (3) किसी के धर्म या विश्वासों को प्रकट करने की स्वतंत्रता केवल ऐसी सीमाओं के अधीन हो सकती है जो कानून द्वारा निर्धारित हैं और सार्वजनिक सुरक्षा, व्यवस्था, स्वास्थ्य, या नैतिकता या मौलिक अधिकारों और दूसरों की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए आवश्यक हैं। (4) वर्तमान प्रसंविदा के सदस्य देश माता-पिता की स्वतंत्रता का सम्मान करने का वचन देते हैं और, जब लागू हो, कानूनी अभिभावक अपने स्वयं के विश्वासों के अनुरूप अपने बच्चों की धार्मिक और नैतिक शिक्षा सुनिश्चित करते हैं।

[iii] इनमें नरसंहार के अपराध की रोकथाम और सजा पर कन्वेंशन (1948); शरणार्थियों की स्थिति से संबंधित कन्वेंशन (1951); नस्लीय भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1965); नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध (1966); आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध (1966); महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन (1979); यातना और अन्य क्रूर, अमानवीय या अपमानजनक व्यवहार या सजा के खिलाफ कन्वेंशन (अपमानजनक 1984); बाल अधिकारों पर कन्वेंशन (1989); सभी प्रवासी श्रमिकों और उनके परिवारों के सदस्यों के अधिकारों के संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1990); विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन (2006); और जबरन गुमशुदगी से सभी व्यक्तियों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (2006)।

[iv] इनमें मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा (1948); धर्म या विश्वास के आधार पर असहिष्णुता और भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन पर घोषणा (1981); राष्ट्रीय या जातीय, धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों से संबंधित व्यक्तियों के अधिकारों पर घोषणा (1992); आपदा प्रतिक्रिया कार्यक्रमों में अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस और रेड क्रीसेंट मूवमेंट और गैर सरकारी संगठनों के लिए आचरण के सिद्धांत (1994); सहिष्णुता के सिद्धांतों पर यूनेस्को घोषणा (1995); धर्म या विश्वास, सहिष्णुता और गैर-भेदभाव की स्वतंत्रता के संबंध में स्कूली शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार सम्मेलन का अंतिम दस्तावेज (2001); पब्लिक स्कूलों में धर्मों और विश्वासों के बारे में शिक्षण पर टोलेडो मार्गदर्शक सिद्धांत (2007); स्वदेशी लोगों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र घोषणा (2007); "मानव अधिकारों में विश्वास" पर हेग वक्तव्य (2008); अभिव्यक्ति और समानता की स्वतंत्रता पर कैमडेन सिद्धांत (2009); मानवाधिकार परिषद का संकल्प 16/18 धर्म या विश्वास के आधार पर व्यक्तियों के खिलाफ असहिष्णुता, नकारात्मक रूढ़िवादिता और कलंक, और भेदभाव, हिंसा और हिंसा के लिए उकसाने पर (और इस्तांबुल प्रक्रिया, 2011); राष्ट्रीय, नस्लीय या धार्मिक घृणा की वकालत के निषेध पर रबात कार्य योजना जो भेदभाव, शत्रुता या हिंसा के लिए उकसाती है (2012); अत्याचार अपराधों के लिए विश्लेषण की रूपरेखा (2014); हिंसक चरमपंथ को रोकने के लिए महासचिव की कार्य योजना (2015); साथ ही हिंसा के लिए उकसाने को रोकने पर Fez घोषणा जो अत्याचार अपराधों (2015) को जन्म दे सकती है।

[v] धार्मिक या विश्वास ग्रंथों के सभी उद्धरण बेरूत कार्यशाला के प्रतिभागियों द्वारा अपने स्वयं के धर्म या विश्वास के संबंध में पेश किए गए थे और केवल दृष्टांत और गैर-संपूर्ण होने का इरादा रखते हैं।

[vi] www.icrc.org/eng/assets/files/publications/icrc-002-1067.pdf देखें।